IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, June 2023

महिला सशक्तिकरण में जनसंचार के योगदान का एक अध्ययन
(रीवा जिले के रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड के सन्दर्भ में)

डॉ. प्रतिभा श्रीवास्तव
शोध निर्देशक, सेवानिवृत्त प्राध्यापक समाजशास्त्र विभाग
शा. इन्दिरागांधी गृहविज्ञान स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय शहडोल (म.प्र.)
राजेन्द्र कुमार साकेत
शोध छात्र, समाजशास्त्र, शास. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

शोध सारांश :-

परिवार का अगर कोई मजबूत स्तंभ है तो वो महिला है। महिलाओं की अनुपस्थिति में परिवार का कोई उज्जवल भविष्य नहीं है। 8 मार्च महिला दिवस के नाम से जाना जाता है। इस दिन को महिलाएं गर्व से जीती हैं। आज की महिलाएं और बीते समय की महिलाओं में बहुत अंतर देखने को मिल जाता है। आज महिलाएं अपने हक को समझती हैं, अपना सम्मान करना जानती हैं। इसका संपूर्ण ज्ञान श्रेय जनसंचार माध्यमों को जाता है, जिसने महिलाओं को सशक्त बनाया और इस काबिल बनाया कि वे अपनी तमाम मुश्किलों से स्वयं लड़ने में सक्षम हैं। वर्तमान समय में जनसंचार ने समाज में अपने झंडे गाड़ दिये हैं। वो महिलाओं के सशक्तिकरण के लिये वो तमाम कोशिशें कर रहे हैं जो प्रत्येक महिला का जन्मसिद्ध अधिकार है, ताकि वे समाज में अपनी एक अलग पहचान बना सके, अपनी समर्थता दिखा सके।

मुख्यशब्दः महिला सशक्तिकरण, परिवार, जनसंचार, समाज, अधिकार, सक्षम आदि।

प्रस्तावनाः

सशक्तीकरण एक व्यापक शब्द है। जिसमें अधिकारों और शक्तियों का स्वाभाविक रूप से समावेश होता है। यह एक ऐसी मानसिक अवस्था है जो कुछ विशेष आंतरिक कुशलताओं, शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि परिस्थितियों पर निर्भर करती है। जिसके लिए समाज में आवश्यक कानूनों, सुरक्षात्मक, कल्याणत्मक या उनके सुचारू क्रियान्वयन हेतु सक्षम प्रशासनिक व्यवस्था का होना आवश्यक हैं। विश्व में महिलाओं की प्रस्थिति, भूमिका और अधिकारों में वृद्धि की सफलता तथा महिलाओं को पुरूषों के बराबर वैधानिक, संवैधानिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में उनके परिवार, समाज, समुदाय एवं राष्ट्र की साँस्कृतिक पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की स्वायत्ता, आत्मनिर्भरता, स्वावलम्बी और विकासोत्थान में उत्तरोत्तर सहभागिता, उत्तरदायित्व एवं सक्षमता को ही महिला–सशक्तीकरण कहते हैं। पैलिनीथूराई के शब्दों में देखते है कि "महिला सशक्तीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज के विकास की प्रक्रिया में राजनीतिक संस्थाओं के द्वारा महिलाओं को पुरूषों के बराबर मान्यता दी जाती है।" लीला मीहेनडल के अनुसार "महिला सशक्तीकरण – निड़रता, सम्मान और जागरूकता तीनों शब्द महिला सशक्तीकरण में सहायक है। यदि डर से आजादी महिला सशक्तीकरण का पहला कदम है, जो तेजी से न्याय से उसकी आवश्यकता पुरी हो सकेगी। यदि महिलाओं आजकल महिलाओं का शोषण, छोटी बच्चियों का बलात्कार जैसी अभद्र वारदातें हो रही हैं। नई नवेली दुल्हनो को दहेज के लिये प्रताड़ित किया जाता है, इन तमाम अमानवीय व्यवहार को जनसंचार समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है, और दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा भी मिलती है। जिससे अन्य को सबक मिलता है। लोग कोइ भी जुर्म करने से पहले कई बार सोचते हैं। जनसंचार को चाहिए कि महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए अपने प्रयास को जारी रखे। महिलाओं पर अत्याचार

बहुत पहले से ही होता आ रहा है, परन्तु हम सब इनसे अनभिज्ञ थे। परन्तु मीडिया के आते ही सम्पूर्ण अभद्रता हमारे सामने आई। आज महिलाएं सशक्त हैं, आजाद हैं, और निडर है। डिजिटल मीडिया की भूमिका ने महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा करने का काम किया है। रेडियो, टीवी ने महिलाओं की सोच में बदलाव ला दिया है, वो अपने फैसले खुद लेने के लिए सजग हैं। उन्हें किसी के ऊपर निर्भर रहने की कोई आवश्यकता नही है।

वास्तव में न्याय दिलाना है तो उनकी जाँच–परख प्रणाली को और अधिक कार्यकुशल बनाना होगा तथा अराजकता फैलाने वाले तत्वों को सजा देनी होगी।" महिला–सशक्तीकरण मुख्य रूप से नीति निर्माण, निर्णय, प्रक्रिया एवं समावेशी विकास में महिलाओं में की सहभागीदारिता को सुनिश्चित करता है। सशक्तीकरण एक बहुआयामीसतत् प्रक्रिया है जो कि व्यक्तिगत तथा सामूहिक प्रयासों से आमजन में जागरूकता बढ़ाकर तथा समन्वित प्रयास से ही सम्भव है। सशक्तीकरण में शिक्षा एक समहत्वपूर्ण साधन है। सशक्तीकरण एक लक्ष्य है और संयोजित विकास की आवश्यकता दशा भी। जनसंचार का उल्लेख करते ही हमारा ध्यान मुद्रण, पत्र (डाक) दूरभाष, टेलीग्राफ, रेड़ियो आदि संचार के साधनों की ओर जाता हैं ये सभी उपकरण शताब्दियों से चले आ रहे हैं तथा यह सभ्यता या विज्ञान के विश्वास का परिणाम है। जिस तरह परिवहन या यातायात के आधुनिक साधनों–रेल गाडियों, मोटरकार, वायुयान, जलपोतों से मनुष्य लाभ उठाते हैं, इसी तरह संचार के साधन भी हमारी सहायता करते हैं। जनसंचार के साधन, विचारो, सूचनाओं, उत्प्रेरक संकेतो के आदान प्रदान से ही हमारे समग्र जीवन, मूल्यों और संस्कृति की संरचना होती है। जनसंचार एक माध्यम है जिसके द्वारा संदेश, सूचना एवं विचार आम लोगों तक पहुँचते है। जनसंचार की गति अब वैश्विक स्तर की है। कुछ ही क्षणों में सभी प्रकार के संदेश, सूचनाएँ एवं विचारों को सर्वत्र प्रेषित किया जा सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

1. महिलाओं के सशक्तीकरण से वर्तमान में स्त्रियों की स्थिति का अध्ययन।
2. जनसंचार माध्यमों से महिलाओं में आई जागरूकता को जानना।
3. महिलाओं के लिए बनी कल्याणकारी योजनाओं में प्रशासन तथा जनसंचार माध्यमों की भूमिका का विश्लेषण।
4. महिलाओं को शिक्षित करने में जनसंचार माध्यमों की भूमिका का विश्लेषण।

शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध विषय को ध्यान में रखते हुए निम्न पद्वतियों का उपयोग किया गया है –

निदर्शन प़द्धति :–

अध्ययन को स्वरूप देने के लिए उद्देश्यपरक निर्देशन के अन्तर्गत रीवा जिले के रायपुर विकासखण्ड का चयन किया गया। रायपुर विकासखण्ड इलाकों में रह रही महिलाओं का चयन निदर्शन के माध्यम से किया गया है।

शोध उपकरण :–

प्रश्नावली–अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिए रीवा जिले के रायपुर विकासखण्ड क्षेत्रों में निवास कर रही महिलाओं से प्रश्नावली के माध्यम से उनकी राय और विचारों को जानने के प्रयास किया गया है। तथ्य संकलन के लिए प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। प्रश्नावली के अंतिम प्रश्न के रूप में खुला प्रश्न दिया गया जिसके माध्यम से प्रतिभागियों के विचारों को भी शोध में शामिल किया गया है।

अनुसूची—भाषाई विविधता होने के कारण, कुछ प्रतिभागियों को प्रश्नावली समझने में समस्या होने के कारण, उनसे राय और विचार जानने के लिए प्रश्नावली का उपयोग यहाँ अनुसूची के रूप में भी किया गया है।

तथ्य विश्लेषण एवं आंकडों का प्रस्तुतिकरण –

प्रस्तुत शोध में अध्ययन के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। महिला सशक्तिरण में जनसंचार की स्थिति, इसकी लोकप्रियता और कार्य पद्धति को केन्द्र में रखकर यह शोध कार्य किया गया है।

तथ्यों और आंकड़ों को प्रश्नावली, अनूसूची के माध्यम से एकत्रित कर उनका विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध रीवा जिले के रायपुर विकासखण्ड क्षेत्र में रहने वाली महिलाओं पर विशेष रूप से केन्द्रित है। अध्ययन में 18 वर्ष से अधिक महिला को शामिल किया गया है। जिनमे विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई है। तथ्य संकलन हेतु पचास से अधिक प्रश्नावली, अनुसूची को भरवाया गया है। लेकिन तथ्य विश्लेषण में पचास प्रतिभागियों के मतो को शामिल किया गया है। तथ्य संकलन का कार्य मार्च 2022 में किया गया है।

साक्षात्कार अनुसूची में कुल 03 प्रश्नो को शामिल किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची में बहुविकल्पीय प्रश्नों के माध्यम से प्राप्त तथ्यों को अध्ययन हेतु केन्द्र में रखा गया है। साक्षात्कार अनुसूची में विकल्प के रूप मे हॉ, नही और पता नही को तथ्य संकलन हेतु आधार बनाया गया है। जो इस प्रकार है

तालिका क्रमांक 01 क्या जनसंचार माध्यमों से महिलाओं में जागरूकता आई है।

क्रमांक	न्यादर्श का चयन	संख्या	प्रतिशत
01	हॉ	30	60
02	नही	15	30
03	पता नही	05	10
योग –		**50**	**100**

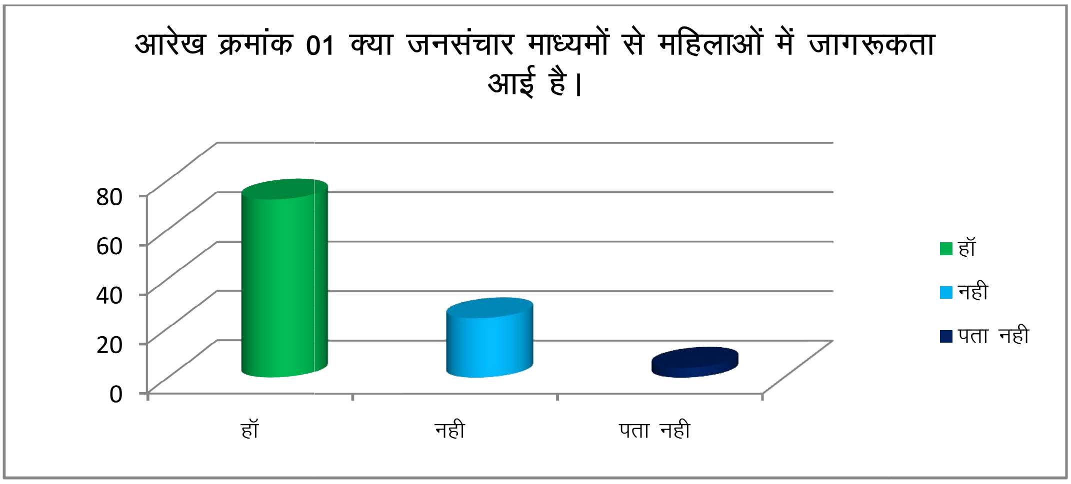

उपरोक्त तालिका क्रमांक 01 से स्पष्ट होता है कि जनसंचार माध्यमों से महिलाओं में जागरूकता आयी है। में कुल न्यादर्श की संख्या 50 में से 30 (60 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि महिलाओं में जागरूकता आयी है। जबकि 15 (30

DOI: 10.48175/IJARSCT-11952

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 7.301

Volume 3, Issue 1, June 2023

प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि जागरूकता नही आयी है तथा 05 (10 प्रतिशत) उत्तरदाताओं को इसके बारे में जानकारी नही है।

तालिका क्रमांक 02

क्या महिलाओं के लिए बनी कल्याणकारी योजनाओं में प्रशासन तथा जनसंचार माध्यमों की भूमिका है।

क्रमांक	न्यादर्श का चयन	संख्या	प्रतिशत
01	हॉ	28	56
02	नही	16	06
03	पता नही	06	12
योग –		50	100

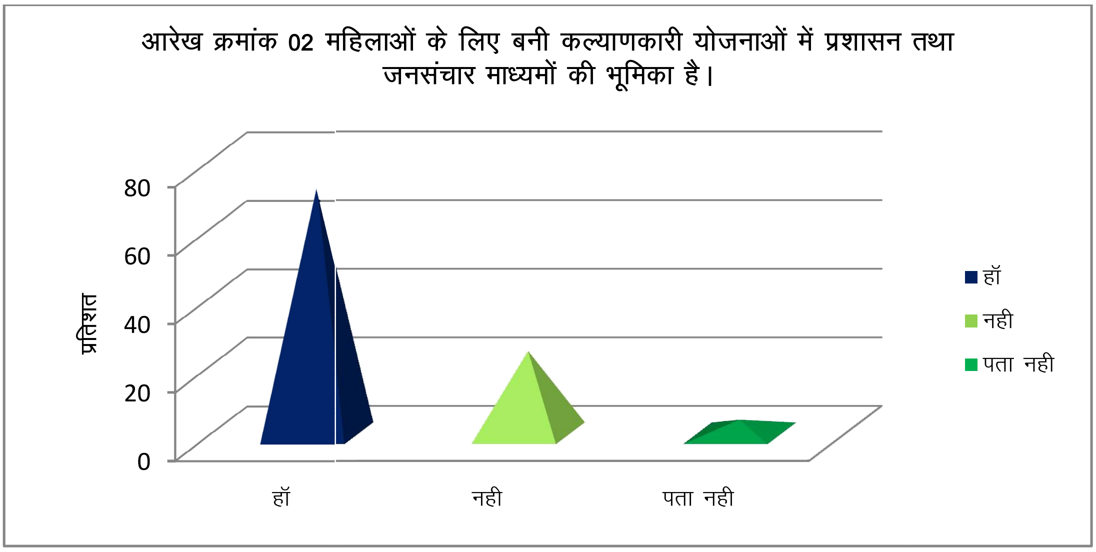

उपरोक्त तालिका क्रमांक 02 से स्पष्ट होता है कि महिलाओं के लिए बनी कल्याणकारी योजनाओं में प्रशासन तथा जनसंचार माध्यमों की भूमिका है। में कुल न्यादर्श की संख्या 50 में से 28(56 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि प्रशासन तथा जनसंचार की भूमिका है। जबकि 18(36 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि भूमिका नही है तथा 06(12 प्रतिशत) उत्तरदाताओं को इसके बारे में जानकारी नही है।

तालिका क्रमांक 03

क्या महिलाओं को शिक्षित करने में जनसंचार माध्यमों की भूमिका है।

क्रमांक	न्यादर्श का चयन	संख्या	प्रतिशत
01	हॉ	36	72
02	नही	12	24
03	पता नही	02	04
योग –		50	100

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, June 2023

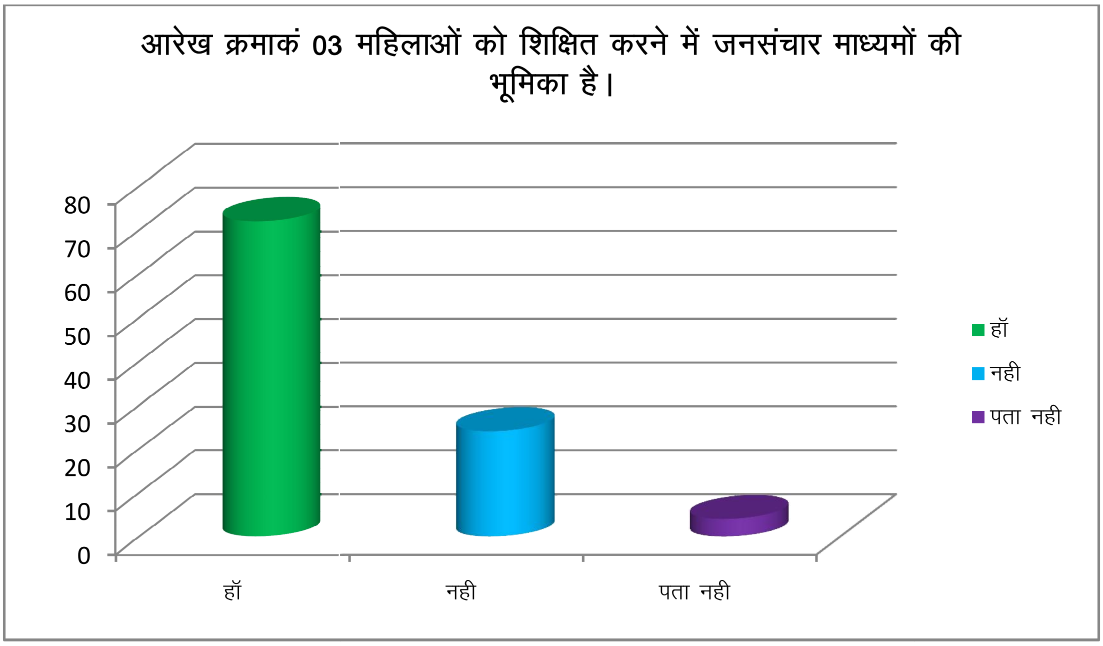

उपरोक्त तालिका क्रमांक 03 से स्पष्ट होता है कि महिलाओं को शिक्षित करने में जनसंचार माध्यमों की भूमिका है। में कुल न्यादर्श की संख्या 50 में से 36(72 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि महिलाओं को शिक्षित करने में जनसंचार माध्यमों की भूमिका है। जबकि 12(24 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि भूमिका नही है तथा 02(04 प्रतिशत) उत्तरदाताओं को ज्ञात नही है।

शोध निष्कर्ष :–

आजादी के बाद सबसे बड़ा परिवर्तन एवं विकास संचार व्यवस्था में हुआ है। आज स्थिति यह है कि देश के करीब–करीब हर गाँव में टेलीफोन पहुँच गया है। संचार क्रांति लाने का पूरा श्रेय पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गाँधी को जाता है। वर्ष 2003 में हुए सर्वे में यह बात सामने आई कि अभी तक एक हजार लोगों पर मात्र 50 टेलीफोन उपभोक्ता है। लेकिन वर्तमान परिवेश में करीब–करीब हर परिवार में एक से दो मोबाइल जरूर है। संचार क्रांति आने से गाँवों में रोजगार के संसाधन बढ़े है। सर्वे के मुताबिक 98 फीसदी परिवारों के पास मोबाइल सुविधा उपलब्ध हो चुकी है। पता चला है कि महिलाएँ अब निश्चित रूप से मोबाइल रखना चाहती हैं। फिलहाल गाँवों में संचार सुविधाओं के आने के बाद और कई तरह की सुविधाओं को चार चाँद लग गए हैं। अब गाँवों में जगह–जगह साइबर कैफे खुल रहे हैं जहाँ से लोग आसानी से अपनी जरूरत की चीजों के बारे में जान सकते हैं। ग्रामीण महिलाएँ भी अब कम्प्यूटर एवं इंटरनेट का प्रयोग कर जानकारी प्राप्त कर रही है। इससे एक तरफ उनका ज्ञान बढ़ रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. सारस्वत, डॉ. ऋतु, 2017, स्त्री विहिन परिवार हो तो क्या पुरूष अस्तित्व बनेगा, राजस्थान पत्रिका, जयपुर।
2. लिमये, संध्या, 2017, निशक्तजनों का सशक्तीकरण, योजना, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, नई–दिल्ली।
3. आयोजन विभाग, 2016,2017, आर्थिक समीक्षा, अर्थिाक एवं सांख्यियी निदेशालय, योजना भवन, तिलक मार्ग, सी–स्कीम, जयपुर।

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 7.301

Volume 3, Issue 1, June 2023

4. नावरिया, महेश, 2016 पंचायतीराज एवं महिला विकास, (उभरते प्रतिमान), रितू पब्लिकेशन्स, प्लाट नं. 28, सीतारामपुरी, आमेर रोड, जयपुर।

5. अजिज, एन.पी. अब्दुल, 2015, भारत में महिला–सशक्तीकरण, अनमोल प्रकाशन, प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।

6. शर्मा, जी.एल. 2015, सामाजिक मुद्दे, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।

7. हुसैन अनवर, 2015, महिला संगठन एवं समाज, रितू पब्लिकेशन्स, प्लाट नं. 28, सीतारामपुरी, आमेर रोड़, जयपुर।

8. मुहम्मद नईम, 2014, महिला–सशक्तीकरण : चुनौतियां एवं समाधान, यूर्निवसिटी प्रकाशन, नई–दिल्ली।

9. योजना पत्रिका जनवरी 2021

10. कुरूक्षेत्र पत्रिका मार्च 2022

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-11952

ISSN 2581-9429 IJARSCT